Date-8/02/24

B.A II Subsidiary
Dr. Kusum Kr.
Deptt of Psychology

Phobia दुर्भीति

Phobia का अर्थ :→ Phobia एक मानसिक रोग है; Phobia की उत्पत्ति ग्रीक शब्द फोबोस से हुई है। जिसका अर्थ है भय (Fear) आतंक या पलायन (Flight) यह भय अतार्किक Illogical and Irrational होता है।
स्पष्ट है कि Phobia का अर्थ ऐसा भय जो दृढ़ एवं अतिरेकी होता है और उसका सम्बन्ध ऐसी वस्तु या परिस्थिति से होता है जो हानिप्रद या खतरनाक नहीं होती है इसलिए, दुर्भीति को असामान्य भय कहते हैं।

Three kinds of Phobia :- (i) विशिष्ट दुर्भीति (ii) एगोराफोबिया (iii) सामाजिक दुर्भीति।

(i) विशिष्ट दुर्भीति :→ विशिष्ट दुर्भीति का अर्थ वह है Phobia है जिसमें भय या चिन्ता का सम्बन्ध किसी वस्तु जैसे:- जानवर, बीमारी, आग आदि।

(a) ऊँची जगह का भय - Acrophobia
बन्द या तंग का भय Claustrophobia
भीड़ का भय → Ochlo Phobia
पशुओं का भय → Zoophobia
खून का भय - Hemato Phobia
जहर दिए जाने का भय Toxophobia
रोग का भय - Pathophobia
अन्धकार का भय - Nyctophobia।
धूल का भय - Myso Phobia
आग का भय - Pyrophobia
अकेला पन का भय - Mono Phobia

(ii) एगोराफोबिया (Agoraphobia) तात्पर्य खुले स्थान से भय है। एगोराफोबिया एक दुर्भीति विकृति है जो मनोवैज्ञानिक उपचार पाने वाले व्यक्तियों में सर्वाधिक पायी जाती है।

(iii) सामाजिक दुर्भीति (Social Phobia)
रोगी बाधक तरीकों से व्यवहार करने तथा लज्जित होने का भय से पीड़ित रहता है और परिणाम स्वरूप दूसरों से बचने के लिए परेशान रहता है। जिसमें सामाजिक परिस्थितियों के प्रति दृढ़ बना रहता है कि लोग क्या-क्या सोचेंगे, जिससे उसको अपमान का सामना करना पड़े...

Anxiety Disorders:

लक्षण – कारण

Anxiety Disorders (चिन्ता विकृति) स्नायु विकृति तथा चिन्ता विकृति दोनों समान अर्थ रखने वाले शब्द पद हैं। जिन मानसिक विकृतियों को इंगित करने के लिए पहले स्नायु विकृति शब्द का व्यवहार किया जाता था, उन्हीं मानसिक विकृतियों को इंगित करने के लिए आज चिन्ता विकृति शब्द का व्यवहार किया जाता है।

भिन्न-भिन्न मनोवैज्ञानिकों ने स्नायुविकृति अथवा चिन्ता विकृति को परिभाषित करने का प्रयास किया है। Brown के अनुसार स्नायुविकृति का अर्थ बोधात्मक, संवेगात्मक, तथा क्रियात्मक प्रक्रियाओं की साधारण असमान्यताएँ हैं, जो व्यक्ति को प्रायः ~~लक्षण~~ केवल आंशिक रूप से अक्षम बना देती हैं, और जिनके मौलिक लक्षणों का सम्बन्ध चिन्ता से होता है।

(i) चिन्ता विकृति एक साधारण मानसिक विकृति है। इसमें व्यक्ति की संज्ञानात्मक, संवेगात्मक, क्रियात्मक प्रक्रियाओं में साधारण असमान्यता विकसित हो जाती है।

(ii) स्नायुविकृति से पीड़ित व्यक्ति का मुख्य लक्षण चिन्ता है। रोगी किसी न किसी तरह की चिन्ता से पीड़ित होता है, किन्तु चिन्ता का कारण ज्ञात नहीं रहता है।

(iii) चिन्ता विकृति के अन्तर्गत कई मानसिक विकृति की गणना की जाती है, जिनमें मनोभीति बाध्यता आदि मुख्य हैं।

चिन्ता विकृति के सामान्य लक्षण:-

(i) चिन्ता → (Anxiety) चिन्ता विकृति का एक मुख्य लक्षण चिन्ता है। इस रोग से पीड़ित व्यक्ति में किसी न किसी तरह का चिन्ता का लक्षण प्रधान होता है। किसी रोगी में दुर्घटना का शिकार, पानी में डूब जाने से, किसी की हत्या कर देने से अन्यथा सम्बन्धित चिन्ता देखी जाती है।

(ii) संवेगात्मक तनाव (Emotional tension) → का एक सामान्य लक्षण संवेगात्मक तनाव है। रोगी सदा न सदा किसी संवेगात्मक तनाव से पीड़ित रहता है। संवेगात्मक रूप से अधिक क्रियाशील तथा पीड़ा या सिर दर्द का रोगी का शिकार हो जाता है।

Date-8/02/24

(iii) दोष एवं निराशा का भाव → चिन्ता विकृति रोगी दोष के भाव से पीड़ित होता है। रोगी को ऐसा महसूस होता है कि उसके विगत जीवन में कुछ पाप किए हैं, जिसके कारण उसका वर्तमान जीवन दुःखद है। रोगी निराशावादी बन जाता है तथा उदासीन जीवन बिताने लगता है।

(iv) अयोग्यता तथा असुरक्षा का भाव → रोगी को अयोग्यता तथा असुरक्षा का लक्षण पाया जाता है। रोगी साधारण काम के लिए अपने आप को अयोग्य समझने लगता है। और भय, चिन्ता, तथा असुरक्षा के भाव से पीड़ित रहा करता है।

(v) स्वार्थवाद तथा पारस्परिक सम्बन्ध →
चिन्ता विकृति रोगी में आत्मकेन्द्रिता का लक्षण पाया जाता है। वह परिवार समाज से अलग-2 रहने का प्रयास करता है। दूसरे लोगों से पारस्परिक सम्बन्ध बिगड़ जाता है।

कारण:
चिन्ता विकृति के कारण:-
(i) जैविक कारक (Biological factors)
(ii) मनोवैज्ञानिक कारक (psychalogical factors)
(iii) सामाजिक सांस्कृतिक कारक

(i) जैविक कारण का तात्पर्य जनकिक कारक, शरीर के रचनात्मक कारक हारमोन उपद्रव आदि से है।

(ii) मनोवैज्ञानिक कारक :- चिन्ता विकृति के उत्पन्न में मनोवैज्ञानिक कारकों का हाथ अधिक होता है।

(iii) सामाजिक सांस्कृतिक कारक :- चिन्ता स्नायुविकृति या चिन्ता विकृति के विकास में जैविक कारकों तथा मनोवैज्ञानिकों कारकों के साथ-साथ कई सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों का हाथ होता है। अध्ययनों तथा दैनिक जीवन के अनुभव से पता चलता है कि चिन्ता स्नायुविकृति का एक कारण सामाजिक एवं सांस्कृतिक जटिलता है। जिस समाज में सांस्कृतिक में आर्थिक शैक्षिक, जटिलताएँ अधिक होती हैं वहाँ के लोगों में मानसिक रोग के लक्षणों के विकसित होने की सम्भावना अधिक होती है।

×